महर्षि वाल्मीकि जन्मोत्सव एवं भव्य शोभायात्रा में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

आदिकवि, महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती पर आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं।

महर्षि वाल्मीकि जन कल्याण सत्संग मण्डल के तत्वावधान में आज कोटा में भव्य शोभा यात्रा और सत्संग का आयोजन हो रहा है। मैं आप सभी को इसके लिए साधुवाद देता हूँ।

आज का दिन हमारे आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जी को याद करने, उनकी शिक्षाओं और संदेशों को जीवन में उतारने का दिन है।

संस्कृत भाषा के प्रथम महाकाव्य की रचना करने के कारण महर्षि वाल्मीकि जी को आदि कवि कहा जाता है। महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती पर आज देशभर में धार्मिक-सामाजिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। झांकियां निकाली जा रही है, मंदिरों में वाल्मीकि जी की पूजा की जा रही है।

आज शरद पूर्णिमा भी है। मान्यता है कि इस दिन चंद्रमा सबसे अधिक चमकीला और धरती के सबसे नजदीक होता है। इसका अपना आध्यात्मिक महत्व है। आज का दिन भक्ति और शक्ति को अर्जित करने का एक विशेष दिन है।

महर्षि वाल्मीकि जी ने पुरुषार्थ एवं साधना से ज्ञान, वैराग्य और अध्यात्म की ऊंचाई को हासिल कर मानवता के कल्याण के लिए कार्य किया। उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से भगवान राम की कथा को अमर बनाया।

महर्षि वाल्मीकि जी ने अपनी अमर रचना रामायण के माध्यम से देश और दुनिया को भगवान श्रीराम के पावन चरित्र से साक्षात्कार कराया है। रामायण के माध्यम से उन्होंने प्रत्येक नागरिक के मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया है।

दुनिया की कोई ऐसी भाषा नहीं है, जिसने रामायण को आधार न बनाया हो। मूल रूप से महर्षि वाल्मीकि जी ने संस्कृत में रामायण की रचना की। लेकिन हम देखते हैं कि उसके बाद अंग्रेजी,

हिंदी, अरबी, फारसी, अवधी सहित लगभग सभी भाषाओं में रामायण का अनुवाद हुआ और भगवान श्री राम के व्यक्तित्व, उनके चरित्र का बखान किया गया।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के चरित्र को सर्वप्रथम आम जनमानस तक पहुंचाने का श्रेय अगर किसी को है, तो वह महर्षि वाल्मीकि जी को है।

महर्षि वाल्मीकि जी नहीं होते, तो दुनिया इस तरह से भगवान श्री राम के जीवन को नहीं जान पाती।

रामायण खुद को बेहतर बनाने की चाह रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अनमोल है। अपनी उन्नति के साथ - साथ अपने समाज और देश के उत्थान के लिए पूरे समर्पण से कार्य करने का संदेश हमें रामायण से मिलता है।

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि जी का जीवन और सम्पूर्ण रामायण से हमें यह सीख मिलती है कि राष्ट्र निर्माण में सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज की सहभागिता जरूरी है। लोगों को महर्षि वाल्मीकि से सहानुभूति, समर्पण और कर्तव्य भावना की सीख लेनी चाहिए।

महर्षि वाल्मीकि जी का जीवन हमें निरंतर परिश्रम और अपने लक्ष्य के लिए समर्पण की प्रेरणा देता है। बताते हैं कि एक बार वाल्मीकि जी तपस्या में बैठे थे। लंबे समय तक चले इस तप में वो इतने मग्न थे, कि उनके पूरे शरीर पर दीमक लग गई।

लेकिन उन्होंने बिना तपस्या भंग किए निरंतर अपनी साधना पूरी की। इसके बाद ही आंखें खोली। फिर दीमकों को हटाया। कहा जाता है कि दीमक जिस जगह अपना घर बना लेते हैं, उसे वाल्मीकि कहते हैं, इसलिए उन्हें वाल्मीकि के नाम से जाना जाने लगा।

महर्षि वाल्मीकि जी का जीवन हमें सामाजिक समरसता, समानता, एकता और आपसी प्रेम का संदेश देता है। रामायण में एक प्रसंग वाल्मीकि जी ने लिखा है।

एक बार भरत, शत्रुघ्न, मुनि वसिष्ठ, और सभी नगरवासी, सेनापति, मंत्री सब श्रीराम के दर्शनों की प्रतीक्षा में थे। केवट ने श्रीराम को सबके आने की सूचना दी थी। श्रीराम, भरत और केवट को लेकर अयोध्यावासियों का स्वागत करने के लिए आगे बढ़े। सर्वप्रथम श्रीराम ने गुरु वसिष्ठ के चरणों का स्पर्श किया। गुरुदेव ने उन्हें आशीष दिया। केवट की भी इच्छा थी गुरु वसिष्ठ जी के चरण धूलि को

मस्तक पर लगाने की। किन्तु इतने लोक विख्यात मुनि के पास जाने में उसे संकोच हो रहा था। उसकी इस व्याकुलता की ओर श्रीरामजी का ध्यान था, किन्तु मुनि वसिष्ठ का ध्यान नहीं था। भगवान श्रीराम केवट का हाथ पकड़ कर स्वयं वसिष्ठ जी के पास गए और बोले- "गुरुदेव! क्या आपने इसे पहचाना? यह मेरा परम मित्र है।"

गुरु वसिष्ठ ने यह सुनकर केवट को गले से लगाया। उन दोनों के दिव्य मिलन को देख कर ही श्रीराम की आँखों में हर्ष के आँसू आ गए। रामायण का यह मिलन सामाजिक समरसता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे श्रीराम ने अपने आचरण से हम सबके लिए प्रस्तुत किया।

शबरी को अपनी माता समान मानने वाले भगवान श्री राम केवट के परम मित्र थे। भगवान श्री राम का यह आदर्श हमें सामाजिक समानता की सीख देता है। सभी मनुष्य समान हैं, किसी में कोई भेद नहीं, सभी को मिल-जुलकर रहना चाहिए, यह संदेश हमें वाल्मीकि जी की रामायण देती है।

जब हम यह पढ़ते हैं कि किस तरह वाल्मीकि जी एक साधारण मनुष्य से महर्षि वाल्मीकि बने, तो उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि इंसान जो चाहे कर सकता है; बस उसे सही दिशा चाहिए, भगवान का साथ और आत्मविश्वास होना चाहिए।

मान्यताओं के अनुसार महर्षि वाल्मीकि जी का नाम पहले रत्नाकर था। वे डाकू की तरह जीवन जीते और जंगलों में अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए लोगों को लूटा करते थे।

कहा जाता है कि एक बार रत्नाकर डाकू ने जंगल में किसी मुनि (कहा जाता है कि नारद मुनि) को बंदी बना लिया था।तब मुनि (ऋषि) ने पूछा कि इन गलत कार्यों से तुम्हें क्या मिलेगा? रत्नाकर बोला, ये मैं अपने परिवार के लिए करता हूँ। तब ऋषि ने कहा कि जिसके लिए तुम गलत मार्ग पर चल रहे हो, उनसे पूछो की क्या वह तुम्हारे पाप कर्म का फल भोगेंगे!

उन ऋषि की बात सुनकर रत्नाकर अपने परिवार के लोगों से पूछने गया कि मैं तुम्हारे लिए लूट खसोट करके जीवन जीने की व्यवस्था करता हूँ, क्या तुम मेरे इन कर्मों का फल भोगोगे? रत्नाकर के इस सवाल पर उसके परिवार के सभी सदस्यों ने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि परिवार का

पालन – पोषण करना तो आपका दायित्व है। अब आप किसी भी तरह से हमारा भरण-पोषण करो, लेकिन अगर आप गलत कर्म करते हो, तो उस का फल आपको ही भोगना होगा।

परिवार वालों की इस बात को सुनकर रत्नाकर बहुत दुखी हुआ, और गलत मार्ग का त्याग करते हुए भगवान श्री राम की भक्ति में डूब गया। इसके बाद ही उन्हें रामायण महाकाव्य की रचना करने की प्रेरणा मिली।

इस जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम किसी भी सूरत में गलत रास्ते पर ना चलें। हम सच्चाई, अच्छाई और न्याय के रास्ते पर चलें। किसी का भी बुरा ना करें और अच्छे कर्म करते हुए ही अपना जीवन जिए।

यही संदेश वाल्मीकि जी ने रामायण में भी दिया है। भगवान श्री राम का जीवन आज भी सभी के लिए आदर्श का प्रतिमान है। हम भगवान राम जी तो नहीं बन सकते, लेकिन हम उनके गुणों को, उनकी अच्छाइयों को अपनाकर अपना जीवन जिए, हम उनके पथ का अनुसरण करें; यह प्रेरणा आज सम्पूर्ण मानव समाज को रामायण से मिलती है।

मुझे विश्वास है कि यहाँ उपस्थित हम सभी जन भगवान श्री राम और महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सफल बनाएंगे।

इसी विचार के साथ मैं आज आप सभी को वाल्मीकि जी की जयंती और शरद पूर्णिमा के इस अवसर पर एक बार फिर बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। जय सियाराम– जय वाल्मीकि जी।